भारतीय शासन व्यवस्था में प्रधानमंत्री पद की भूमिका: डॉ. मनमोहन सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष परिपेक्ष्य में

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) से
सामाजिक विज्ञान संकाय के अंतर्गत राजनीति विज्ञान विषय
में पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूपरेखा

2016

शोध निर्देशक

डॉ.एस.बी. कुमार
सहा. प्राध्यापक राजनीति विज्ञान
शासकीय महाप्रभु वल्लभाचार्य स्नातकोत्तर
महाविद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

शोधार्थी

श्वेतामोर
राजनीति विज्ञान

शोध सह निर्देशक

सहा. प्राध्यापक राजनीति विज्ञान
डॉ. सुभाष चन्द्राकर
दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोधकेन्द्र प्रमुख

दुर्गा महाविद्यालय रायपुर

शोधकेन्द्र

दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोध का अध्यायीकरण

''भारतीय शासन व्यवस्था में प्रधानमंत्री पद की भूमिका : डॉ. मनमोहन सिंह और श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष परिपेक्ष्य में''

अध्याय प्रथम	– प्रधानमंत्री के पद का आरंभ व एवं विकास
अध्याय द्वितीय	– भारतीय संविधान में प्रधानमंत्री का पद
अध्याय तृतीय	– प्रधानमंत्री एवं ससंद की संबद्धता
अध्याय चतुर्थ	– प्रधानमंत्री के संवैधानिक अधिकार व शक्तियॉ
अध्याय पंचम	– पं. नेहरू से लेकर श्री नरेन्द्र मोदी तक विविध प्रधानमंत्रियों का कार्यकाल
अध्याय षष्ठ्म	– डॉ. मनमोहन सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यो का तुलनात्मक अध्ययन
अध्याय सप्तम्	– निष्कर्ष एवं सुझाव
परिशिष्ट	– 1. संदर्भ ग्रंथ सूची 2. फोटोग्राफ/समाचार पत्र इंटरनेट से लिये गई सामग्री

प्रस्तावना

भारतीय संविधान द्वारा भारत में संसदात्मक शासन की स्थापना की गई है। इसमें राष्ट्रपति देश का औपचारिक या संवैधानिक प्रधान होता है, वहीं प्रधानमंत्री को देश का वास्तविक प्रधान समझा जाता है। भारत में प्रधानमंत्री का पद इंग्लैड की शासन व्यवस्था से लिया गया हैं। इंग्लैंड में प्रधानमंत्री का पद परम्परा द्वारा अस्तित्व में आया है। इस संबंध में वहाॅ के संविधान में कुछ नहीं कहा गया है परंतु भारतीय संविधान के अनुच्छेद 53 (1), 74 (1) और 75 (1) से प्रधानमंत्री की स्थिति का ज्ञान होता है। राष्ट्रपति लोकसभा में बहुमत प्राप्त दल के नेता को ही प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त करता है किंतु जब लोकसभा में किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न हो तब कुछ राजनीतिक दल संयुक्त गठबंधन बनाकर किसी एक व्यक्ति को आम सहमति से अपना नेता चुन लेते है फिर वह व्यक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री नियुक्त किया जाता हैं।

लार्ड मार्ले ने प्रधानमंत्री के विषय में कहा है था कि – ''प्रधानमंत्री समकक्षों में प्रथम हैं।'' वर्तमान में राजनीतिक संस्थाओं क बदलते परिवेश में प्रधानमंत्री के पद की महिमा ही बदल गई। प्रधानमंत्री के पास राज्य अध्यक्ष से भी अधिक शक्तियाॅ हैं। डॉ. अंबेडकर के शब्दों में– ''प्रधानमंत्री संपूर्ण शासन तंत्र की धुरी है।'' प्रधानमंत्री को देश का 'हृदयस्थल', 'गुरूत्वाकर्षण का केन्द्र' की संज्ञा दी जाती हैं।

पिछले 69 वर्षो में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में प्रधानमंत्री पद की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। प्रधानमंत्री मुख्य प्रशासक, मुख्य नीति निर्माता तथा मुख्य राजनीतिक नेता के रूप में राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित हुआ हैं। पं. नेहरू और श्रीमती गांधी जैसे आकर्षक व्यक्तित्व वाले प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को स्थायित्व प्रदान किया। 1984 के लोकसभा चुनाव में श्री राजीव गांधी ने अभूतपूर्व बहुमतप्राप्त कर प्रधानमंत्री पद को सुशोभित किया। परंतु 1989 के बाद किसी भी एक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ अतः 1989 से 2014 का दौर गठबंधन सरकारों का रहा। विश्वनाथ प्रताप सिंह (89–90) श्री चंद्रशेखर (1990–91) पी.वी. नरसिंह राव (1991–96) एच.डी. देवगौड़ा (1996–97) इंद्र कुमार गुजराल (1997–98) प्रधानमंत्री के रूप में कोई निर्णायक छाप नहीं छोड़ पाये, अतः इनके कार्यकालवधि मेंप्रधानमंत्री पद की स्थिति दुर्बल

हुई। श्री अटल बिहारी वाजपेयी भाजपा के निर्विवाद नेता और करगिल नायक के रूप में उतने ही लोकप्रिय हुए जितने पं. नेहरू और श्रीमती गांधी अपने स्वर्णिम दिनों में थे। 2004 और 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के रूप मे उभरी तथा मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यू.पी.ए. सत्ता में आई। यह स्थिति भी दुर्बल प्रधानमंत्री की ही थी क्योंकि आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ और अकादमिक प्रतिभा के होने के बावजूद,वे कभी जनाधार वाले नेता नहीं रहे। उनके कार्यकाल में सारे निर्णय कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा लिये जाते रहे और उनकी भूमिका मौनदर्शक की रही।

2014 के लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बीजेपी को अपार सफलता प्राप्त हुई। यह निर्वाचन भारतीय प्रजातंत्र के इतिहास में मील का पत्थर रहा है क्योंकि 1989 के बाद पहली बार किसी एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। यह श्री नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व कार्यशैली और नेतृत्व का प्रभाव था।इसके अलावा यू.पी.ए. सरकार की नीतिगत अनिर्णयता, जनता का सरकार से मोहभंग होना, असंतोष की स्थिति एवंनेतृत्व की कमजोरीयू.पी.ए.का लोकसभा चुनाव में हारने का अन्य कारण थे।परिणामतः एन.डी.ए.श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में लोकसभा में 336/543 सीटें प्राप्त कर सकी ।

आतंकवाद, नक्सलवाद, सांप्रदायिकता, भ्रष्ट राजनीतिक नेतृत्व, सत्ता लोलुपता मंहगाई जैसी समस्याओं को झेल रहे भारत का नेतृत्व ऐसे हाथों में जाना जो उर्जावान, समर्पित ओर साफ सुथरी छवि वाले है, वास्तव में यह शोध का विषय है कि देश ने जिस विश्वास के साथ अपना जनादेश उन्हें दिया हैं – ''क्या वे भारत का पुनरूत्थान कर पायेंगे एवंप्रधानमंत्री के पद की गरिमा, उर्जा एवं महिमा को उंचाई दे पायेंगे ? ''

भारत में प्रधानमंत्रियों की सूची

Sr. No.	Name	Period From	Period To	Date of Birth
1	जवाहर लाल नेहरू	15-Aug-1947	27-May-1964	14-Nov-1889
2	गुलजारीलाल नंदा	27-May-1964	9-Jun-1964	4-Jul-1898
3	लाल बहादुर शास्त्री	09-Jun-1964	11-Jan-1966	02-Oct-1904
4	गुलजारीलाल नंदा	11-Jan-1966	24-Jan-1966	4-Jul-1898
5	इंदिरा गांधी	24-Jan-1966	24-Mar-1977	19-Nov-1917
6	मोरारजी देसाई	24-Mar-1977	28-Jul-1979	29-Feb-1896
7	चरण सिंह	28-Jul-1979	14-Jan-1980	23-Dec-1902
8	इंदिरा गांधी	14-Jan-1980	31-Oct-1984	19-Nov-1917
9	राजीव गांधी	31-Oct-1984	02-Dec-1989	20-Aug-1944
10	विश्वनाथ सिंह प्रताप	02-Dec-1989	10-Nov-1990	25-Jun-1931
11	चंद्रशेखर	10-Nov-1990	21-Jun-1991	01-Jul-1927

12	पी.वी. नरसिंह राव	21-Jun-1991	16-May-1996	28-Jun-1921
13	अटल बिहारी वाजपेयी	16-May-1996	01-Jun-1996	25-Dec-1924
14	एच.डी. देवगौड़ा	01-Jun-1996	21-Apr-1997	18-May-1933
15	इन्द्र कुमार गुजराल	21-Apr-1997	19-Mar-1998	04-Dec-1919
16	अटल बिहारी वाजपेयी	19-Mar-1998	22-May-2004	25-Dec-1924
17	डॉ. मनमोहन सिंह	22-May-2004	25-May-2014	26-Sep-1932
18	नरेन्द्र मोदी	26-May-2014	Present	17-Sep-1950

शोध प्रणाली

प्रस्तुत शोध शीर्षक ''भारतीय शासन व्यवस्था में प्रधानमंत्री पद की भूमिकाः डॉ. मनमोहन सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष परिपेक्ष्य में'' शोध कार्य हेतु तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से किया जाएगा। डॉ. मनमोहन सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी स जुड़े मीडिया एवं प्रशासनिक अधिकारियों एवं अन्य़ लोगों से साक्षात्कार एवं अनुसूची के द्वारा आकड़े एकत्र करने का प्रयास किया जायेगा। द्वितीयक स्त्रोतों के अंतर्गत विषय से संबंधित प्रकाशित पत्र–पत्रिकाएँ, पुस्तकें, लेख,शोध, ग्रन्थ, समाचार पत्रों की रिपोर्ट, इंटरनेट से प्राप्त सामग्री सूचनाएं तथा आंकड़े इत्यादि का अवलोकन एवं संकलन करना सम्मिलित है। अध्ययन हेतु गुणात्मक, वर्णनात्मक और विकासवादी अध्ययन पद्धति का सम्मिलित प्रयोग किया जाएगा। शोध विषय में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और श्री नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व, कायक्षमता और कार्यों का विवेचन करने के लिए तुलनात्मक पद्धति के साथ वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का भी उपयोग किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध शीर्षक लिए संभावित प्राक्कल्पनाओं का निर्माण किया गया है, जिससे शोध कार्य का परिणाम ज्यादा स्पष्ट और सही हो सके।

1. प्रधानमंत्री पद भारतीय शासन व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु है।
2. प्रधानमंत्री का व्यक्तित्व और चरित्र संपूर्ण शासन व्यवस्था को प्रभावित करता है।
3. प्रधानमंत्री किसी भी स्थिति मे अधिनायक नहीं बन सकता।
4. 2014 का लोकसभा चुनाव भारतीय मतदाताओं के व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन का सूचक है।
5. चौदह प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल में भारत राष्ट्र का विकास हुआ है।
6. प्रधानमंत्री सैद्यांतिक व व्यवहारिक, दोनो रूपों में सर्वाधिक शक्तिशाली होता है।
7. मंत्री परिषद् में प्रधानमंत्री का सर्वोच्च स्थान है।

8. प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी को प्राप्त अप्रत्याशित सफलता भारतीय जनमानस का अपने नेतृत्व के लिए आशाओं व सपनों को चिन्हित करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तावित अध्ययन के लिए अग्रलिखित उद्देश्य निर्धारित किये है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाएगा।

1. भारत में प्रधानमंत्री की संवैधानिक स्थिति और व्यवहारिक स्थिति का विश्लेषण करना।
2. ''सरकार राष्ट्र की स्वामी है और प्रधानमंत्री सरकार का स्वामी है'' ग्रीब्ज के इस कथन के संदर्भ में भारतीय प्रधानमंत्री की स्थिति का अवलोकन करना।
3. राष्ट्र के नायक के रूप में प्रधानमंत्री के उत्तरदायित्वों व कर्तव्यों को चिन्हित करना।
4. अब तक पदस्थ चौदह प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल का मूल्याकंन करना।
5. विविध प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल के संदर्भ में भारतीय राजनीति के विकास के स्तरों को निरूपित करना।
6. प्रधानमंत्री के रूप में डॉ. मनमोहन सिंह और श्री नरेन्द्र मोदी की घरेलू एवं विदेश नीति का अध्ययन करना।
7. राष्ट्र के विकास में प्रधानमंत्री की भूमिका का विश्लेषण करना।

पूर्व में किये गयें शोध साहित्य का पुनरावलोकन

प्रस्तावित अध्ययन में पूर्व में किये गये शोध कार्य/लेखकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के संबंध में समीक्षा करके जानकारी प्राप्त की गई है जो अग्रलिखित है।

- डॉ. सुभाष कश्यप ने अपनी पुस्तक ''भारतीय संविधान'' में लिखा है– भारतीय संविधान संसदात्मक शासन व्यवस्था का सृजन करता है। प्रधानमंत्री की स्थिति को अनुच्छेद 53 (1), 74 (1) और 75 (1) द्वारा समझा जा सकता है। अनुच्छेद 53 (1) के अनुसार ''संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहीत होगी तथा वह इसका प्रयाग या तो स्वयं या अपने अधीनस्थ पदाधिकारियों के द्वारा करेगा।'' अनुच्छेद 74(1) में कहा गया है–''राष्ट्रपति

को अपने कार्यों का संपादन करने में सहायता और मंत्रणा देने के लिए प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक मंत्रीपरिषद् होगी और राष्ट्रपति मंत्रीपरिषद् से प्राप्त परामर्श के आधार पर कार्य करेगा।'' अनुच्छेद् 75(1) के अनुसार ''प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होगी तथा अन्य मंत्रियों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री के परामर्श से की जाएगी।''

- खाण्डेकर शिवकुमार (1999) ने अपनी पुस्तक ''राजीव की विदेश नीति के परिपेक्ष्य में भारत श्रीलंका संबन्धो का विश्लेषात्मक अध्ययन'' में लिखा है, प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी की छवि जितनी अपने कार्यकाल के प्रारंभिक एक वर्ष मे निखरी थी उससे ऐसा लग रहा था वे अपना संपूर्ण कार्यकाल एक सफल प्रधानमंत्री के रूप में पूरा करेंगे लेकिन हुआ था इसके विपरीत। वे अपनी स्वच्छ छवि को भी कायम नहीं कर पाए। बोफार्स सौदे में दलाली के प्रश्न ने उन्हें आरोप–प्रत्यारोपों के घेरे में ला खड़ा किया। श्रीलंका के साथ किया गया कोलंबो समझौता और भारतीय शांति सेना की भूमिका उनकी कूटनीतिक असफलता ही साबित हुई। वे आधुनिक विचारों वाले व्यक्ति थे जिनका सपना था भारत प्रौद्योगिकी के रूप में उन्नत होकर इक्कसवी सदी में प्रवेश करें।
- मीना शर्मा (2002) अपनी पुस्तक ''भारतीय राजनीति व्यवस्था में प्रधानमंत्री की भूमिका'' में विवेचन किया है– भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने लगभग 30 सालों तक शासन पर एकछत्र राज किया इस स्थिति में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री राजीव गांधी सशक्त प्रधानमंत्री रहें 1977 के आम चुनाव में किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला और जनता पार्टी के नेतृत्व में केन्द्र में पहली बार गठबंधन सरकार की स्थापना हुई। गठबंधन सरकार की मजबूरियों के कारण प्रधानमंत्री की स्थिति कमजोर हुई है।
- राजेन्द्र कुमार साव (2004) ने अपनी पुस्तक ''भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की भूमिका एक अनुशीलन''में बताया है– शास्त्री जी का कार्यकाल अत्यंत अल्प रहा उनकी नियुक्ति में यद्यपि में कोई स्पष्ट विरोध नहीं हुए किन्तु कामराज की सहायता से वे प्रधानमंत्री बने। अपने आकर्षक व्यक्तित्व और सहज स्वभाव के कारण उन्हे जनता का नेता बनते देर न लगी। उनके क्रियाकलाप मात्र सैद्यांतिक न होकर पूर्णतः व्यवहारिक और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप थे उनके कार्यकाल में देश में श्वेत क्रांति और हरितक्रांति का सूत्रपात हुआ।

- डॉ. विमल शुक्ला ने अपनी पुस्तक ''भारतीय संविधान में प्रधानमंत्री की भूमिका'' के संदर्भ में कहा है–प्रधानमंत्री और जनता परस्पर अंर्तसंबंधित और अन्योन्याश्रित है। प्रधानमंत्री की भूमिका, उनके कार्यो एवं नीतियों का प्रभाव जनता पर पड़ता है। वह न केवल सत्तारूढ़ दल का वरन् संपूर्ण राष्ट्र का नेता होता है अतः जनमत के विश्वास बहुमत एवं लोकप्रियता को अपने पक्ष में कर वह अत्यंत शक्तिशाली प्रधानमंत्रीय भूमिका संपादित कर सकता है।
- डॉ. एम ए. साहिल ने अपनी पुस्तक ''भारतीय प्रशासन'' में लिखा है –वर्तमान समय में गठबंधन सरकार के रहने के कारण प्रधानमंत्री एक संतुलन के नियम के आधार पर कार्य कर रहे है प्रधानमंत्री वैसा ही है जैसा इस पद को प्राप्त करने वाला व्यक्ति इसे बनाना चाहता है या अन्य मंत्री इसे बनाने में सहयोग देते है। कुछ हद तक यह प्रधानमंत्री पद प्राप्त करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व पर निर्भर करता हैं।
- डॉ. एम लक्ष्मीकांत ने अपनी पुस्तक ''लोक प्रशासन'' में ब्रिट्रिश प्रधानमंत्री और भारतीय प्रधानमंत्री की स्थिति की विवेचना की है– उन्होंने लिखा है ब्रिटेन में संसदीय प्रणाली की सरकार में प्रधानमंत्री की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण हो गई है कि प्रेक्षको ने सरकार को प्रधानमंत्री उन्मुख सरकार कह डाला है। वस्टमिनिस्टर में संसदीय प्रजातंत्र का अस्तित्व खत्म हो गया है। ब्रिट्रीश शासन प्रणाली की मुख्य कमी प्रधानमंत्री को प्राप्त अतिमंत्रीय शक्तियॉ हैं। यह कथन भारतीय प्रधानमंत्री के संदर्भ में सही बैठता हैं।
- डॉ. डी.सी.त्रिपाठी के शब्दों में– भारत में सभी प्रधानमंत्रियों ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल को मंत्रीमंडलीय भूमिका से ही प्रारंभ किया है। धीरे–धीरे राजनीतिक स्थितियों में सुधार, सत्ता के विस्तार एवं पक्ष में परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार उन्होंने अपनी भूमिका को उत्तरोत्तर विकसित किया। वह मुख्य प्रशासक, सत्ता का स्त्रोत, मुख्य नीति निर्माता तथा राजनयिक के रूप में राष्ट्र के समक्ष उपस्थित हुआ हैं। भले ही हम प्रधानमंत्रीय शब्द का प्रयोग न करें लेकिन स्वतंत्रता के बाद कैबिनेट तथा समस्त शासन के संबंध में प्रधानमंत्री को बहुत अधिक प्रमुखता की स्थिति प्राप्त हो गई है और मंत्री मंडल के सदस्यों की स्थिति प्रधानमंत्री के एजेंट जैसी हो गयी है।

- हम्फी बर्कले ने अपनी पुस्तक ''द पावर ऑफ प्राइम मिनिस्टर'' में लिखा है– आधुनिक युग में प्रधानमंत्री की प्रधानमंत्रीय भूमिका के अंतर्गत संसदीय सर्वोच्चता का सिद्धांत क्षीण हो गया है, अब प्रधानमंत्री में कार्यकुशलता एवं प्रभावकारी संयत्र के रूप में नियंत्रण रखने के संसदीय शक्तियॉ संवैधानिक परिकल्पनाओं का अंग मात्र रही हैं। आधुनिक युग में महत्वपूर्ण एवं मतभेदपूर्ण विषय संसद की अपेक्षा प्रधानमंत्री द्वारा संसदीय दल की बैठक, संसदीय कार्यकारिणी एवं संसदीय समितियों की बैठकों में विचार विमर्श द्वारा पूर्व ही निर्णीत कर लिये जाते है। संसद मात्र रबर स्टैंप के रूप में उस पर अपनी स्वीकृति की औपचारिकता मात्र की पूर्ति करती हैं।
- डॉ. अमरेश्वर अवस्थी एवं डॉ. आनंद प्रकाश अवस्थी ने अपनी पुस्तक ''भारत में लोकप्रशासन'' में लिखा है– प्रधानमंत्री संपूर्ण शासन प्रणाली का मूल आधार है और राष्ट्रीय राजनीति का केन्द्र बिंदु। भारत में प्रधानमंत्री कार्यपालिका का वास्तविक अध्यक्ष होता है। वह अपने दल और जनता का सर्वोच्च नेता तथा देश का प्रमुख प्रवक्ता होता है इस प्रकार वह देश का नेता, संसद की नेता, मंत्री मंडल का प्रमुख और सर्वोच्च राजनीतिक शक्ति का मूर्तिमान स्वरूप होता है।
- प्रशासनिक सुधार आयोग ने प्रधानमंत्री कें संबंध में अपने प्रतिवेदन में लिखा है– संविधान सरकार की कार्यपालिका में प्रधानमंत्री को विशिष्ट स्थिति प्रदान करती हैं। उसकी उच्च स्थिति उसे इस बात का विशिष्ट उत्तरदायित्व सौंपती है कि वह यह देखे कि कार्यपालिका प्रभावपूर्ण ढंग से कार्य करती है, संयुक्त उत्तरदायित्व का उचित रूप से क्रियान्वयन होता है तथा प्रशासन जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य करता है।
- विजय सिंघवी ने ''द हिदुस्तान टाइम्स'' में विविध प्रधानमंत्रियों के व्यक्तित्व की विवेचना करते हुए लिखा है– यदि मोरारजी देसाई, चरण, विश्वनाथ, प्रताप सिंह, चन्द्रशेखर, पी.वी. नरसिंह राव, एच.डी. देवगौड़ा और इंद्रकुमार गुजराल जैसे व्यक्ति प्रधानमंत्री हैं, तो प्रधानमंत्री पद की स्थिति दुर्बल हो जाती है। एच.डी. देवगौड़ा और इंद्र कुमार गुजराल जैसे प्रधानमंत्री के सर पर संयुक्त मोर्चे की संचालन समिति सवार थी, जो प्रधानमंत्री की सत्ता एवं शक्तियों पर नियंत्रण लगाती रही। ऐसी विलक्षण संस्था का निर्माण निर्णय लेने में सहायता करने के लिए नहीं वरन् प्रधानमंत्री को निर्णय लेने से

रोकने के लिए किया गया, प्रधानमंत्री का पद इतना अशक्त नहीं हुआ जितना संयुक्त मोर्चे के शासन काल में रहा।

- डॉ. पुखराज जैन ने अपनी पुस्तक ''भारतीय प्रधानमंत्री की भूमिका'' में लिखा है–प्रधानमंत्री की स्थिति पर उसके निर्वाचन का अत्याधिक प्रभाव पड़ता है। यदि प्रधानमंत्री अपना पद अपनी राजनीतिक शक्ति और जनता के सीधे समर्थन के बल पर प्राप्त करता है (पं. नेहरू ने अपने जीवन काल म श्रीमति इंदिरा गांधी ने 1971 और 1980 में तथा राजीव गांधी ने दिसम्बर 1984 में इसी रूप में पद प्राप्त किया) तो वह आत्मविश्वास के साथ शासन के प्रमुख के रूप में कार्य करने में समर्थ होता है लेकिन जब वह अपना पद अन्य तत्वों के समर्थन और सहयोग से प्राप्त करता है (1964, 1966, 1967, 1977, 1989, 1990, 1996, 1997, 1998, 2004 और 2009 में ऐसी ही स्थिति थी) तो प्रधानमंत्री पद की स्थिति स्वाभिक रूप से निर्बल हो जाती है। प्रथम स्थिति ही प्रधानमंत्री पद और भारतीय राजव्यवस्था के हित में है।
- मारिस जोन्स ने अपनी पुस्तक ''द गर्वनमेंट एंड पालिटिक्स ऑफ इंडिया'' में लिखा है– संसदीय शासन प्रणाली में प्रधानमंत्री को शासन का केन्द्र माना जाता है। प्रधानमंत्री पद का सतत् विकास इंग्लैड में हुआ। वहॉ सर्वप्रथम क्राउन के मंत्री अधिनियम 1937 के अंतर्गत प्रधानमंत्री के पद को वैधानिक मान्यता प्राप्त हुई। बिट्रीश प्रधानमंत्री के पास विधि विहीत वास्तविक शक्ति बिल्कुल भी नहीं है। वर्तमान में उसे जो भी शक्तियॉ प्राप्त है वे सभी उसे सांविधानिक अभिसमयों से ही प्राप्त है। भारत के प्रधानमंत्री का पद इस अर्थ मे बिट्रेन के प्रधानमंत्री से भिन्न है कि भारतीय संविधान के अंतर्गत प्रधानमंत्री के पद का उल्लेख स्पष्ट शब्दों में किया गया है।
- इंडिया टुडे ने अक्टूबर 2015 के अपने अंक में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के बारे में लिखा है– सत्ता में आने के पिछले डेढ़ वर्षो में उन्होने कूटनीति का एक मौलिक ऊर्जस्वी हमलावर और अति सक्रिय संस्करण विकसित किया है, जिसमें एक दूरदर्शी नेता, एक सेल्समैन और एक रंगकर्मी का थोड़ा– थोड़ा अक्स दिखाई देता है लेकिन कुल मिलाकर वह होता बहुत जानदार है। ऐसे करने की प्रक्रिया में मोदी ने भारत के बारे में अंतर्राष्ट्रीय आख्यान बदल डाला है, जो कभी एक लड़खड़ाता हुआ देश था वह उभरती हुई वैश्विक ताकत में तब्दील हो रहा है। मोदी की ख्वाहिश दुनिया में संतुलनकारी ताकत के रूप में भारत की भूमिका को नेतृत्वकारी ताकत में तब्दील कर देने की है।

- डॉ. जे.सी. जौहरी ने अपनी पुस्तक ''इंडियन गवर्नमण्ट एंड पालिटिक्स'' में निष्कर्ष निकाला है– भारत में जन निर्वाचन वस्तुतः प्रधानमंत्री का ही निर्वाचन हो गया है। सन् 1971, 1980, 1984, 1989, 1996, तथा 1990 के निर्वाचन सही मायने में व्याक्तित्व के ही चुनाव थे। जिस प्रकार अमेरिका में राष्ट्रपति का व्यक्तित्व अधिक महत्वपर्ण होता है न कि उसकी दल और दलीय विचारधारा, भारत में भी प्रधानमंत्री का व्यक्तित्व ही संपूर्ण चुनाव पर छाया रहता है। जिस प्रकार अमेरिका में राष्ट्रपति का निर्णय प्रभावकारी होता है उसी प्रकार भारत में प्रधानमंत्री का निर्णय सर्वोपरि होता हैं।
- डॉ. हरीश खरे ने ''राज्यशास्त्र समीक्षा'' में अपने लेख में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के बीच की स्थिति स्पष्ट करते हुए लिखा है– अब तक जो भी राष्ट्रपति हुए है, वे न्यूनाधिक रूप से औपचारिक या संवैधानिक राज्य प्रधान ही रहे है और उन्होंने अपनी इस स्थिति को चाहे अनचाहे स्वीकार किया है। भारत में प्रधानमंत्री न केवल मंत्रीमंडल का अध्यक्ष और समकक्षों में प्रथम है अपितु वह राष्ट्रपति का मुख्य परामर्श दाता भी है। प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और मंत्री परिषद् के बीच संचार और संवाद की भूमिका में भी रहता है। वास्तव में प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के व्यक्तित्व का पारस्परिक सामंजस्य, राष्ट्रपति के चुनाव में प्रधानमंत्री द्वारा अदा की गई भूमिका, प्रधानमंत्री की राजनीतिक प्रतिष्ठा तथा देश की सामान्य राजनीतिक स्थिति दोनों के पारस्परिक संबधों का निर्धारण करेगी। अंततः भारतीय राजनीति के परिपेक्ष्यमें यह कहना सत्य है कि प्रत्येक प्रधानमंत्री राष्ट्रपति भवन में एक मैत्रीपूर्ण व्यक्तित्व का होना पसंद करता है।
- डॉ. लाल नारायण शर्मा ने अपनी पुस्तक ''प्रधानमंत्री की नियुक्ति'' में लिखा है– प्रधानमंत्री की स्थिति मजबूत बनाने में विपक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत वर्ष में विपक्ष दुर्बल है, अतः विपक्ष द्वारा प्रधानमंत्री के कार्यो को न तो चेतावनी दी जा सकती है और न ही उनका विकल्प प्रस्तुत किया जा सकता है। यह सत्य है कि प्रधानमंत्री की स्थिति उसके दल और उसके गौरव से प्रभावित है दल के बाहर प्रधानमंत्री कुछ भी नही। दल जब तक चाहे तब तक ही कोई व्यक्ति प्रधानमंत्री पद पर बना रह सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कश्यप, सुभाष–''भारत का संवैधानिक विकास और संविधान'', राजकमल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, दसवाँ संस्करण, 1998
2. कश्यप, सुभाष–''भारत का संविधान'', दिल्ली विश्व विद्यालय, अष्ट्म संस्करण, 1996.
3. शर्मा, प्रभुदत्त–''भारतीय शासन एवं राजनीति'', विश्व भारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, नवम् संस्करण, 2012.
4. सिंघवी, लक्ष्मीमल्ल–''भारतीय संसद नयी दृष्टि'', लोकतंत्र समीक्षा पृ. 161.
5. बर्कले, हम्फ्री–''द पावर ऑफ प्राइम मिनिस्टर'', लंदन पब्लिकेशन, तृतीय संस्करण, 1969.
6. पारोक, ममता–''भारत का प्रधानमंत्री'', विश्व भारती पब्लिकेशनन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2014.
7. फड़िया, बी.एल–''भारतीय प्रशासन'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, पन्द्रहवाँ संस्करण, 2013.
8. प्रशासनिक सुधार आयोग–''रिपोर्ट ऑफ गर्वनमेण्ट ऑफ इंडिया एण्ड इट्स प्रोसेस वर्क'', नई दिल्ली, गर्वनमेण्ट ऑफ इंडिया, पेज नं. 9.
9. जैन, पुखराज–''भारतीय प्रधानमंत्री'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पाँचवा संस्करण, 1981.
10. लक्ष्मीकांत, एम.–''लोकप्रशासन'', टाटा मैकग्राव एज्युकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, दसवाँ संस्करण, 2012.
11. खरे, हरीश–''भारत में प्रधानमंत्री का पद''–शक्ति, क्षमता एवं संभावनाएं, राज्यशास्त्र समीक्षा, नई दिल्ली, 1974.
12. साहिल, एम.ए.–''भारतीय प्रशासन'', जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, ग्यारहवाँ संस्करण, 2008.
13. सलिल, अनिल कुमार–''भारत का संविधान'', प्रभात पेपर वैक्स, नई दिल्ली, बारहवाँ संस्करण, 2016.
14. कोठरी, रजनी–''भारत में राजनीति'', इप्रोरियेंट लागमैन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1972.
15. शर्मा, राजेन्द्र प्रसाद–''भारतीय प्रशासन'', स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि., नई दिल्ली, दसवाँ संस्करण, 2013.

16. अवस्थी, अमरेश्वर एवं अवस्थी आनंद प्रकाश–''भारत में लोकप्रशासन'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पाँचवा संस्करण, 2013.
17. द्विवेदी, आर.एन.–''भारतीय राजनीतिक व्यवस्था'', विश्व भारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, चौथा संस्करण, 2008.
18. नायर, कुलदीप–''बिटवीन द लाइन्स'', इंडिया टुडे, 1990.
19. रेड्डी, संजीवनीलम–''राष्ट्रपति के संस्मरण'', वर्ल्ड हेरीटेज पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 1989.
20. शर्मा, लाल नारायण–''प्रधानमंत्री की नियुक्ति'', लोकतंत्र समीक्षा, 1966.
21. कमलेश्वर–''अटल बिहारी बाजपेयी एक उदारपंथी नेता का उदय'', दैनिक भास्कर, अक्टूबर 1999.
22. बसु, दुर्गा दास–''भारत का संविधान एक परिचय'', वाधवा एण्ड कंपनी, नागपुर, सातवाँ संस्करण, 2000.
23. जोन्स, मारिस–''भारतीय शासन और राजनीति'', सुरजीत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1970.
24. कोल और शकधर–''संसदीय प्रणाली और व्यवहार'', हिंदी ग्रंथ अकादमी, तृतीयसंस्करण, 1972.
25. तिवारी, अंशुमन–''अब मिशन पुर्नगठन'', इंडिया टुडे, मई 2016.
26. फड़िया, बाबूलाल– ''प्रधानमंत्री का पद एवं स्थिति'', लोकतंत्र समीक्षा, 1973.
27. शरन, आर. एच.–''द प्राईम मिनिस्टर – ए स्टडी इन पर्सनालिटीज एण्ड स्पेशल फोर्सेज'', जर्नल ऑफ दि सोसायटी फॉर स्टडी ऑफ स्टेट गवर्नमेण्ट्स, जनवरी, 1974.
28. चेंगप्पा, राज–''जग जीतने की तमन्ना'', इंडिया टुडे, अक्टूबर 2015.
29. अय्यर, कृष्ण व्ही.आर.–''भारत मे राजनीति'', ओरियेंट लांगमैंन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1972.
30. झा, किरण–''भारतीय राजनीतिक व्यवस्था'', स्पेक्ट्रम इंडिया जनकपुरी, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण.
31. लास्की, हेराल्ड जे.–''पार्लियामेंटरी गर्वनमेण्ट इन इंग्लैड'', लंदन पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 1961.

शोध पत्रिका

- लोकतंत्र समीक्षा, नई दिल्ली
- संसदीय पत्रिका, नई दिल्ली
- राज्यशास्त्र समीक्षा, जयपुर
- शोध उपक्रम, छत्तीसगढ़
- जर्नल ऑफ दि सोसायटी फॉर स्टडी ऑफ स्टेट गवर्नमेण्ट्स
- रिसर्च लिंक – 135, इंदौर
- कौटिल्य, उज्जैन
- योजना, नई दिल्ली
- इंडिया क्वार्टली, नई दिल्ली

पत्रिकाएँ

- इंडिया टुडे, नई दिल्ली
- पत्रिका,नई दिल्ली
- आऊटलुक, नई दिल्ली
- प्रतियोगिता दर्पण, नई दिल्ली
- प्रतियोगिता किरण, नई दिल्ली
- फंट लाईन, चेन्नई

समाचार पत्र एवं वेबसाइट

- टाइम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
- जनसत्ता, नई दिल्ली
- हिंदुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली

- अमृत वाजार, कोलकाता
- नेशनल हेराल्ड
- द हिंदू,चेन्नई
- इंडियन एक्सप्रेस, मुंबई
- दैनिक भास्कर, रायपुर
- पत्रिका, रायपुर
- देशबंधु, रायपुर
- **www.wikipedia.org**
- **www.pmindia.gov.in**
- **www.narendramodi.in**
- **www.mapsofindia.com**

शोधनिर्देशक

डॉ. एस.बी. कुमार
सहा. प्राध्यापक राजनीति विज्ञान
शासकीय महाप्रभु वल्लभाचार्य
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
महासमुन्द (छ.ग.)

शोध सह निर्देशक

डॉ. सुभाष चन्द्राकर
दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोधकेन्द्र प्रमुख

दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)